लाल मिट्टी के शहर की विरासत

रंजीता बिस्वास

विष्णुपुर सिर्फ अपनी स्थापत्यकला के लिए ही प्रसिद्ध नहीं है। यहां पर कला और संस्कृति के तमाम रत्न बिखरे पड़े हैं। सिल्क निर्माण की परंपरा, राजाओं ओर रानियों के प्रतीकों वाली बालूचरी साड़ी आदि। अमेरिकी राजदूत के सांस्कृतिक कोष से मिली मदद इस धरोहर को बचाने में अहम मदद कर रही है।

स्थापत्यकला का बेजोड़ नमूना: टेराकोटा से बना श्यामराय मंदिर। विष्णुपुर में टेकोटा के शानदार मंदिरों को देखने के लिए देश-विदेश से पर्यटक आते हैं।

अंजन मित्रा

बंगाल का बांकुरा घोड़ा कारीगरी का एक बेहतरीन नमूना है। कॉटेज इंडस्ट्रीज एंपोरियम ऑफ इंडिया से परिचित लोग इसे फौरन पहचान लेंगे। टेराकोटा की यह छोटी सी मूर्ति इस प्रतिष्ठित संगठन का आधिकारिकचिह्न है। हां, अगर आपकी उत्सुकता आपको थोड़ा सा आगे जाने के लिए उकसाती है और यह खोज निकालने के लिए प्रेरित करती है कि घुड़सवारी से जुड़ी इस शानदार आकृति को किसने बनाया, तो आपको बांकुरा जिले की लाल जमीन को टटोलना पड़ेगा। इस प्रक्रिया में आपको दूसरी खोज का पुरस्कार मिलेगा। इस जमीन के गर्भ में एक खजाना है, जिसे विष्णुपुर कहा जाता है। यह वह जगह है जहां बंगाल की खांटी सांस्कृतिक विरासत मूर्त रुप में दिखाई पड़ती है।

पर्यटक ज्यादातर भारतीय ही होते हैं और वे यहां बिखरे हुए शानदार टेराकोटा मंदिरों को देखने जाते हैं। पर विष्णुपुर सिर्फ शानदार स्थापत्य कला तक ही सीमित नहीं है। छोटे से इस इलाके में कला और संस्कृति के कई रत्न हैं-सिल्क निर्माण की परंपरा, राजाओं और रानियों की प्रतीकों वाली बालूचरी साड़ी, सूक्ष्म आकार के चित्र, देवी और देवताओं की पेंटिंग वाले दसावतार ताश की अद्वितीय परंपरा, धातु की घंटी और संवारे गए शंख। विष्णुपुर घराना नाम से शास्त्रीय संगीत की एक शैली भी है। संक्षेप में, यह छोटी सी जगह बहुआयामी परंपराओं का केंद्र है।

संरक्षण विशेषज्ञ महसूस करते हैं कि विष्णुपुर की कलाकृतियों और परंपराओं को उनके समग्र रुप में बचाए रखने का काम बहुत महत्व का है। इसका उचित दस्तावेजीकरण होना चाहिए। इसी संदर्भ में हाल में (2005 में) अमेरिकी राजदूत सांस्कृतिक संरक्षण कोष से पश्चिम बंगाल के इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हेरिटेज (इंटेक) की एक परियोजना को दिए गए 15 हजार अमेरिकी डॉलर का महत्व है। इस परियोजना की अवधि अठारह महीने है। इस कोष की स्थापना वर्ष 2001 में अमेरिकी कांग्रेस ने म्यूजियम के संग्रहों, प्राचीन और ऐतिहासिक स्थलों और अभिव्यक्ति के परंपरागत स्वरुपों के संरक्षण में विभिन्न देशों की सहायता करने के लिए की थी। इंटेक की स्थापना 1984 में फेस्टिवल ऑफ इंडिया के कार्यक्रमों के दौरान की गई थी। सांस्कृतिक दिगग्ज जैसे पुपुल जयकर, इतिहासकार जैसे कपिला वात्स्यायन और दूसरे इस तरह की सोच रखने वाले अध्येताओं ने महसूस किया कि भारत के पुरातत्व सर्वेक्षण के संरक्षण प्रयासों के अलावा भारत के दूसरे कई स्मारकों, जीवंत परंपराओं को बचाए जाने के लिए परियोजनाओं की जरुरत है। तब से इंटेक ने विभिन्न राज्यों में तमाम विशेषज्ञों के साथ काम किया है।

विष्णुपर की स्थिति जीवंत शहरी विरासत केंद्र जैसी है। इसे और इसकी अद्वितीय कलाओं और हुनरों के संरक्षण की जरुरत को देखते हुए इस परियोजना का उद्देश्य यूनेस्को से संपर्क करके इसे विश्व विरासत स्थल घोषित करवाने का है। लेकिन इसके लिए वैज्ञानिक दस्तावेजों को तैयार करने की जरुरत है। राजदूत के कोष से इन प्रयासों में मदद मिलेगी।

वास्तुकार अंजन मित्रा, परियोजना समन्वयक (विष्णुपुर की कला, स्थापत्यकला, और संस्कृति) कहते हैं, ''विष्णुपुर का बंगाल के सांस्कृतिक नक्शे में अद्वितीय स्थान है। वास्तव में सही अर्थों में यह एकमात्र बंगाली शहरी परिसर है। बाकी सारी जगह, गौड़ और पांडुआ को छोड़कर, ब्रिटिश शासन में

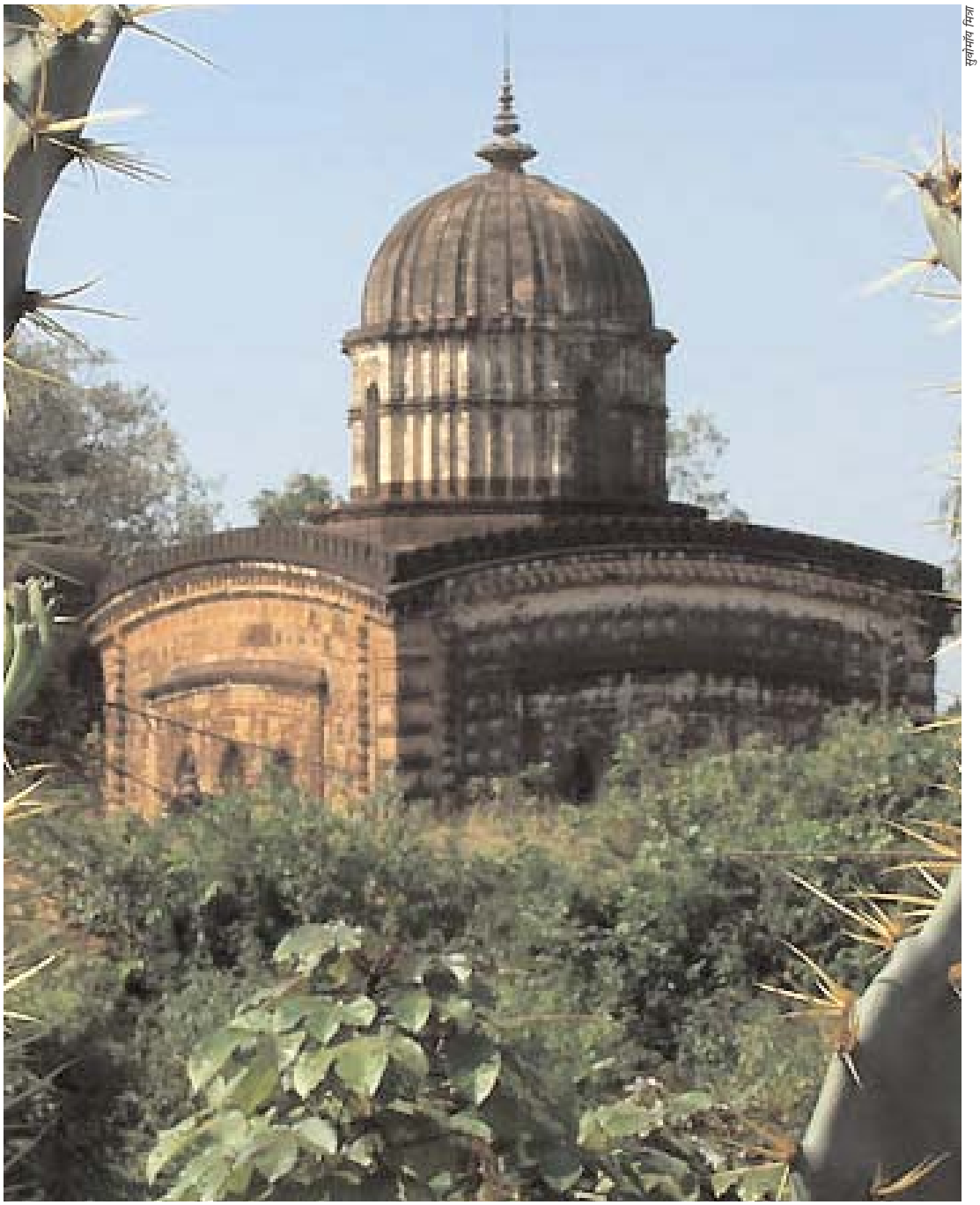

सुबीमांक मित्रा

विष्णुपुर का राधा-श्याम मंदिर: इसमें लाल मिट्टी का अनूठा इस्तेमाल किया गया है। विष्णुपुर के मंदिर बंगला शैली में बने हैं और उन पर ऐसी पच्चीकारी होती है कि मानो वे पत्थरों में उकेरे गए हों। यहां पर आप बंगाल की सांस्कृतिक विरासत के साक्षात दर्शन कर सकते हैं।

विकसित हुए औपनिवेशिक कस्बे हैं।'' सुगम गंगा के मैदानों से अपेक्षाकृत दूर और पृथक रहे साल वनों और तेजी से बहती दामोदर नदी के करीब रहा विष्णुपुर अपनी विरासत को मूल रुप में बचा पाया।

राजधानी कोलकाता से करीब 150 किलोमीटर पश्चिम में स्थित विष्णुपुर रारभूमि यानी लाल मिट्टी का इलाका है। इसे मल्लभूमि के नाम से भी जाना जाता था। यह नाम उन शासक मल्लों (पहलवानों) के नाम पर पड़ा, जो बेहद आजाद तबीयत के थे। चौदहवीं शताब्दी में उनतीसवें राजा जगतमल्ला ने

कोलकाता से 150 किलोमीटर दूर स्थित विष्णुपुर रारभूमि यानी लाल मिट्टी का इलाका है। इसे मल्लभूमि के नाम से भी जाना जाता था। इसके सांस्कृतिक महत्व को देखते हुए इसे अब यूनेस्को की तरफ से विश्व विरासत स्थल घोषित कराने का प्रयास हो रहा है।

विष्णुपुर को अपने शक्तिशाली साम्राज्य की राजधानी के तौर पर चुना। यह साम्राज्य 17वीं और 18वीं शताब्दी में नई ऊंचाइयों पर पहुंचा। कला, संस्कृति और शिक्षा का विकास उनकी छत्रछाया में खूब हुआ। धार्मिक दर्शन को भी राजकीय प्रश्रय मिला। राजा प्रसिद्ध बंगाली वैष्णव गुरु (भगवान कृष्ण के अनुयायी) श्री चैतन्य से बहुत प्रभावित थे। इस बात का उदाहरण यह है कि टेराकोटा मंदिरों में भगवान कृष्ण और उनकी जीवन कथा के प्रतीकों को विशिष्ट तौर पर उकेरा गया है।

मित्रा बताते हैं कि यह कारीगरों का देसी हुनर था कि उन्होने यहीं उपलब्ध सामग्री का प्रयोग किया। लाल मिट्टी स्थानीय तौर पर उपलब्ध थी। उसे इस तरह विशेष तरीके से जलाया गया कि बनाई गई चीजें लंबे समय तक चल सकें। उन पर की गई पच्चीकारी ऐसी प्रतीत होती है, मानो वे पत्थरों से उकेरे गए हों। मंदिरों को बंगला शैली में बनाया गया था। ढालू छतें (छाला) किसानों की घास-फूस की झोंपड़ियों की तरह की हैं। यह स्थापत्यकला के स्थानीयकरण का संकेत है। सबसे आसान स्वरुप है दो छाला या दो छत, जो बाद में ज्यादा जटिल स्वरुपों में विकसित हुए जैसे चार छाला (चार छतें), आठ छाला (आठ छतें) आदि। राधाविनोद मंदिर, केष्टा रे मंदिर इस तरह के प्रयोगों के कुछ उदाहरण हैं। वर्ष 1600 में प्रख्यात राजा बीर हंबीर के समय में बनाया गया रास मंच एक

फोटो: ईस्ट एंड वेस्ट एजुकेशनल सोसायटी

स्थापत्य कला की साझी परंपरा

वर्ष 2005 के राजदूत कोष में वह सहायता भी शामिल है जो पटना के स्थानीय संरक्षण समूह ईस्ट एंड वेस्ट एजुकेशनल सोसायटी को दी गई है। इसके तहत बिहार के पच्चीस जिलों का सर्वेक्षण किया जाएगा। इसका उद्देश्य होगा पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दियों के मुस्लिम और हिंदू स्थापत्यकला के बारे में रिकॉर्ड तैयार करना और ऐसे भवनों को चिह्नित करना जिन्हें भविष्य में संरक्षण प्रदान किया जा सके। यह परियोजना मध्यकाल के बिहार में फली-फूली हिंदू और मुस्लिम विरासत के सह-अस्तित्व को दिखाएगी। पटना की खुदाबख्श ओरियंटल पब्लिक लाइब्रेरी इस सोसायटी को विरासत के बारे में व्याख्यान आयोजित करने, जन-चेतना के स्तर को बढ़ाने और कार्यशालाओं को आयोजित करने में मदद देगी। इस काम में गैर-सरकारी संगठनों, वास्तुकारों और नगर नियोजकों से मदद ली जाएगी। इस लाइब्रेरी में करीब 21,000 प्राचीन पांडुलिपियां हैं और ढाई लाख किताबें हैं। यह स्थापित तो पहले हुई थी, पर यह बिहार के मौलवी खुदा बख्श खान द्वारा चार हजार पांडुलिपियों के साथ जनता के लिए अक्टूबर, 1891 में खोली गई। इन चार हजार पांडुलिपियों में से 1400 उन्हें उनके पिता मौलवी मोहम्मद बख्श से विरासत में मिली थीं। □

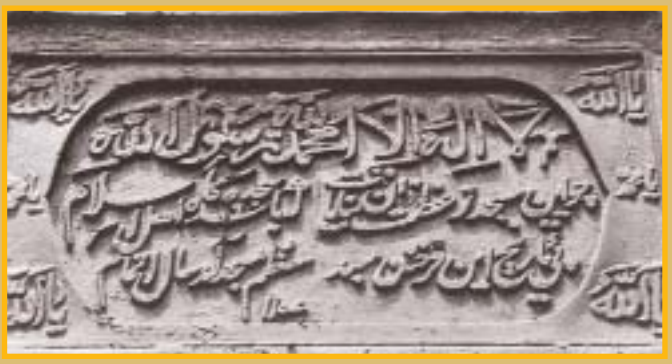

ऊपर: मनेर में शाह दौलत का मकबरा। इसे इब्राहिम खान कांकड़ ने मुगल सम्राट जहांगीर के शासन में बनाया। पूर्वी भारत में यह मुगल काल का सबसे बेहतरीन स्मारक है।
बाएं: मकबरे पर उकेरी गई इबारत।

अलग निर्माण है जिसमें रास के दौरान विष्णुपुर के सारे प्रतीकों को समाहित करने का प्रयोग किया गया है। रास के दौरान श्रीकृष्ण अपनी गोपिकाओं के साथ पूर्णिमा के अवसर पर नृत्य करते हैं। इसमें पिरामिड की तरह की छत है और भवन नीचे के एक खंभे के निचले भाग पर टिका हुआ है और मुख्य हिस्सा तीन लगातार घेरने वाली गैलरियों से घिरा हुआ है।

विष्णुपुर संस्कृत अध्ययन की महान पीठ के रुप में भी उभरा। हालांकि इससे भी इनकार नहीं किया जा सकता है कि यह अनार्य यानी जन-जातीय और आर्य संस्कृति की परंपराओं के संधि-स्थल पर खड़ा है। मल्ल राजा जन-जातीय मूल के थे और उन्होने इस संबंध को बनाए रखा। बंगालियों के सबसे महत्वपूर्ण त्यौहार दुर्गा पूजा में भी यहां की जन-जातीय संस्कृति के तत्व हैं।

> अमेरिकी वित्तीय मदद से चलाई जा रही परियोजना विष्णुपुर की सारी सांस्कृतिक और कला परंपराओं के दस्तावेजीकरण के काम में मदद करेगी।

दो सौ साल पहले, मल्लों ने इस जमीन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बारिश के पानी के संरक्षण के प्रयोग किए। बड़ी-बड़ी टंकियां अब भी पूरे गौरव के साथ मौजूद हैं। इन्हें स्थानीय लोग बंध कहते हैं और ये विष्णुपुर का अभिन्न अंग हैं। मौजूदा परियोजना ऐसी सारी जीवंत परंपराओं के दस्तावेजीकरण में सहयोग करेगी। इस प्रयास में स्थानीय लोगों को शामिल किया गया है और इसके चलते लोगों में बहुत उत्साह है। मित्रा कहते हैं, ''सिर्फ दस्तावेजीकरण काफी नहीं है, मुख्य धारा में लाना जरुरी है, ताकि परंपरा जीवित रह सके।'' लोगों को शामिल किए जाने और उनकी रुचियों को जगाने का मतलब है कि वे भी अपनी सांस्कृतिक विरासत को बचाए रखने में गर्व महसूस करेंगे और ऐसा करने में मदद करेंगे। मुख्य धारा में लाने से भारत और विदेशों से ज्यादा पर्यटक आयेंगे और इसे दीर्घकाल में टिकाऊ बनाए रखने में मदद मिलेगी। अगर यूनेस्को से पहचान मिल गई तो विष्णुपुर एक ऐसी परंपरा होगा जो प्राचीन और वर्तमान दोनों को अपने में समेटे होगी। यह एक सपना साकार होने जैसा होगा। □

लेखिका: *कोलकाता में रहने वाली रंजीता बिस्वास स्वतंत्र लेखिका हैं। वह कहानी लेखन और अनुवाद कार्य भी करती हैं।*

फोटो: करुणा सिंह

गंगटोक का द रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑफ तिब्बतोलॉजी सांस्कृतिक और कलात्मक सामग्री का बड़ा केंद्र है। इसके संग्रहालय में मौजूद धातु की घंटियां (ऊपर) और विशिष्ट कलाकृतियां (नीचे)। पहले नामग्याल के नाम से प्रसिद्ध इस इंस्टीट्यूट की शुरुआत दलाई लामा ने 1957 में की थी।

तिब्बती कलाओं का खजाना

हिमालय से लगे खूबसूरत सिक्किम राज्य के गंगटोक में द रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑफ तिब्बतोलॉजी (पहले नामग्याल इंस्टीट्यूट ऑफ तिब्बतोलॉजी के नाम से जाना जाता था) महायान बौद्धवाद का अद्वितीय केंद्र है। 1957 में परम श्रद्धेय दलाई लामा ने इसकी नींव रखी। बहुत शानदार तरीके से सजाए गए अंदर के हिस्से पर आभूषणमयी लकड़ी और चित्रित दीवारें देखी जा सकती हैं। वेदी पर बुद्ध, बोधिसत्व और तांत्रिक देवी-देवताओं की छवियां हैं। लाइब्रेरी में विश्व में करीब साठ हजार किताबों वाला तिब्बती ग्रंथों का सबसे बड़ा संग्रह है। ये लकड़ी पर खुदाई के काम, पांडुलिपियों, छपे हुए काम और तिब्बती बौद्धवाद के चारों संप्रदायों के संग्रहित कार्य की शक्ल में हैं। इस संग्रहालय के संग्रह में तमाम तरह की रस्म-रिवाजों को पूरा करने में योगदान देने वाले वाद्ययंत्र, धातु की घंटियां, दोरजी, गुलाब की क्यारियां, दुर्लभ तांखा और करीब 200 विशिष्ट प्रतीक और कलाकृतियां हैं। दुर्लभ ज्ञान के इस तरह के कोष का संरक्षण आने वाली पीढ़ियों के लिए इतिहास का संरक्षण करने जैसा है। राजदूत के कोष से 35,000 अमेरिकी डॉलर की 2004 में पूर्ण हो चुकी परियोजना ने इस विशिष्ट संस्थान के संरक्षण प्रयासों में मदद की है। □